ISSN (O): 2320-5407
ISSN (P): 3107-4928

Journal Homepage: - www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

Article DOI: 10.21474/IJAR01/23054
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/23054

CONFERENCE PAPER

डॉ. एल. सुब्रमणियम की शागिर्द परंपरा

संदीप कौर

1. शोधकर्ता संगीत विभाग पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला.

Manuscript Info

Manuscript History
Received: 04 January 2026
Final Accepted: 08 February 2026
Published: March 2026

Abstract

संगीत एक गुरमुखी विद्या है। जिसे गुरू द्वारा सुनकर ही समझा जा सकता है। पंडित साजन मिश्रा के शब्दों में संगीत को गुरू के सामने बैठकर ही सीखा जा सकता है, जैसे बैठक, हाव-भाव, पहनावा और स्वर लगाने का ढंग आदि कोई शार्गिद अपने आप नहीं सीख सकता। कुछ विद्यार्थी कैसेट, डी.वी.डी. आदि से सीखने की कोशिश करते हैं। परन्तु गुरू के बिना संगीत की सूक्षमताओं का अध्ययन संभव नहीं है। एक शागिर्द को संगीत के सफ़र में चलते हुए कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। और कई बार गुरूजन अपने शागिर्दों की परीक्षा भी लेते हैं। जो शिष्य परिक्षाओं में सफ़ल होते हैं। गुरूजन उनपर अपनी सारी विद्या न्योछावर कर देते हैं। गुरू का महत्व : गुरू-शिष्य परंपरा का आधार श्रद्धा और समर्पण है। गुरू अपने शागिर्द को केवल ज्ञान ही नहीं देता बल्कि जीवन सबंधित कई पहलुओं से जोड़ता है। गुरू के बताए मार्ग पर चलते हुए विद्यार्थी अपने अंदर की खामियों को दूर करते हुए सम्पूर्णता की ओर बढ़ते रहते है। संगीत के क्षेत्र में गायक, वादक, कलाकारों के पास संगीत का असीमित भंडार होता है। जो गुरू शिष्य परम्परा के द्वारा आगे बढ़ता है। वर्तमान समय में अगर कोई व्यक्ति संगीत के क्षेत्र में प्रवेश करता है तो उसको संगीत के प्राचीन स्वरूप को समझने के लिए किसी न किसी गुरू का सहारा लेना पड़ता है। गुरू के संदर्भ में डॉ.

"© 2026 by the Author(s). Published by IJAR under CC BY 4.0. Unrestricted use allowed with credit to the author."

एल सुब्रमणियम के विचार : डॉ. एल. सुब्रमणियम ने संगीत की विधिवत शिक्षा अपने पिता प्रो. वी. लक्षमी नारायण अइयर से प्राप्त

Corresponding Author:- संदीप कौर
Address:-शोधकर्ता संगीत विभाग पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला.

की जो एक अच्छे वाइलन वादक होने के साथ-साथ एक कुशल गायक भी थे। डॉ. एल सुब्रमणियम के अनुसार "किसी शिष्य के जीवन में गुरू के मार्गदर्शन का होना बेहद ज़रूरी है। उनकी मान्यता है कि ज्ञान प्राप्ति के लिए हर क्षेत्र में अध्यापक का होना ज़रूरी है किन्तु संगीत के क्षेत्र में गुरू के बिना उन्नति भी कल्पना की नहीं की जा सकती।" डॉ. एल. सुब्रामणियम के माता-पिता अच्छे संगीतकार थे. जो कि न केवल संगीत के क्रियात्मक पक्ष में माहिर थे, बल्कि संगीत के सैद्धांतिक पक्ष की भी समझ रखते थे।

Introduction:-

डॉ. ऐल. सुब्रमणियम एक गुरू के रूप में : डॉ. ऐल. सुब्रामणियम एक सफल मंच प्रदर्शक है, केवल भारत ही नहीं अन्य देशों में भी उनके वायलिन वादन के प्रशंसक बृहद मात्रा में मौजूद है। "डॉ. सुब्रमणियम साल के लगभग आठ महीने संगीतिक कार्यक्रमों के सिलसिले में विदेशी यात्राओं में रहते हैं। फिर भी वह समय-समय पर अपने शिष्यों का मार्गदर्शन करते रहते हैं।" वह अपने शिष्यों से किसी प्रकार की फीस नहीं लेते। उनका मानना है कि "अगर कोई शागिर्द सच्ची लग्न और मेहनत से सीखना चाहता हो तो एक गुरू का कर्तव्य बनता है कि वह अपने शागिर्दों को पूरी ईमानदारी से बिना किसी भेदभाव के शिक्षा प्रदान करे।" डॉ. ऐल. सुब्रमणियम प्रगतिशील विचारों के मालिक हैं। उनका यह नेक ईरादा है कि भारतीय संगीत का जितना हो सके प्रचार करना चाहिए। डॉ. साहब कहते हैं कि वायलिन एक कठिन साज़ है जो निरंतर अभ्यास की मांग करता है। उनका कहना है रिआज़ के बिना एक संगीतकार अपने विषय में निपुण नहीं हो सकता। वह अपने शागिर्दों को अकसर कहते हैं कि चुनौतियों का सामना हार मानने से अच्छा होता है। "सापा अकादमी के विद्यार्थी अभिनव का कहना है कि ऐल. ऐस. सर हमें संगीत के क्रियात्मक और सैद्धान्तिक दोनों पक्षों के आपसी रिश्ते के बारे में यह बताते हैं कि संगीत में यह दोनों पक्ष एक तराजू के दो पहलुओं के समान रखना ज़रूरी है।" डॉ. ऐल. सुब्रमणियम वायलिन वादक होने के साथ-साथ एक अच्छे गायक भी हैं। इसके साथ ही वह कई प्रकार की वादन शैलियों को बजाने में निपुण है। जैसे कि कर्नाटक संगीत, हिंदुस्तानी संगीत, फ्यूज़न संगीत, ओरकेस्ट्रल संगीत आदि। इन सारी शैलियों का ज्ञान उनके वादन को विलक्षण रूप प्रदान करता है। इनके प्रमुख शागिर्दों में अम्बी सुब्रमणियम, बिंदु सुब्रमणियम, हरि रवि कुमार, कंचना, श्रुति रंजनी, मेघना, मंजूनाथ, मेहती सुब्रमणियम, आदित्य, विवेक सुदाशिवम्, और अभिनव के नाम विशेष हैं। जो इनसे संगीतिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और अपना कर्तव्य समझते हुए आगे विद्यार्थियों को यह शिक्षा प्रदान करते हुए सुब्रमणियम सर की परंपरा को आगे भी बढ़ा रहे हैं।

डॉ. अम्बी सुब्रमणियम:- अम्बी सुब्रमणियम वर्तमान समय वायलिन वादन के क्षेत्र में उभरते हुए नौजवान कलाकार हैं जिन्होंने बहुत ही कम आयु में संगीत के आंगन में एक अहम स्थान हासिल कर लिया है इनको बाल्यवस्था में ही सांगीतिक वातावरण घर से ही प्राप्त हुआ। इनके दादा-दादी, माता-पिता, बड़े बहन-भाई सभी संगीत के उपासक रहे हैं। वायलिन वादन में हाथ का रख-रखाव और तालीम अपने पिता डॉ. ऐल सुब्रमणियम से ही प्राप्त की। डॉ. अम्बी का जन्म 5 अगस्त 1991 को डॉ. ऐल. सुब्रमणियम और माता विजयलक्षमी के घर लॉस एंजलस, कैलिफोर्निया में हुआ। आपने अपने पिता की देख-रेख में केवल 3 साल की आयु में वायलिन की शिक्षा प्राप्त करनी आरंभ कर दी थी। आपने अपनी पहली जनतक प्रस्तुती 6 साल की छोटी उम्र में कैलिफोर्निया में दी। अम्बी सुब्रमणियम डॉ. ऐल सुब्रमणियम के पुत्र होने के साथ-साथ शागिर्द भी हैं। उन्होंने वायलिन की पूर्ण शिक्षा अपने पिता जी से प्राप्त की। संगीत के अलावा आपने अकादमिक शिक्षा बी.बी.ए. (Bachelor of Business Management), एम.बी.ए तत्पश्चात् एम.फिल और पी.एच.डी. की डिग्री संगीत विषय में प्राप्त की। "अम्बी सुब्रमणियम बताते हैं कि यह प्रेरणा भी मुझे अपने पिता से मिली क्योंकि उन्होंने खुद संगीत की शिक्षा के साथ-साथ एम.बी.बी.एस. डिग्री पूरी की। जिस के कारण भी अपनी रूचि के अनुसार अपनी शिक्षा पूरी कर पाया।" डॉ. अम्बी एक समर्पित शागिर्द होने के साथ-साथ सा पा अकादमी सी.ई.ओ. भी हैं। डॉ अम्बी ऐल.एस. सर के वह शागिर्द हैं जो आधे से ज़्यादा मंचों पर उनके साथ जाते हैं। अम्बी सुब्रमणियम अपने पिता को अपना आदर्श मानते हैं और उनकी शख़्सियत से बहुत प्रभावित हैं। अम्बी के अनुसार "समय के पाबंद रहना, मर्यादा और बिना दिखावे की पेशकारी के गुण अपने पिता से प्राप्त हुए।"

बिंदु सुब्रमण्यम:- बिंदु सुब्रमण्यम डा. एल. सुब्रमण्यम की पुत्री है। इनका जन्म 7 अगस्त 1984 में लॉस ऐंजलस अमेरिका में हुआ। बिंदु के अनुसार उन्होंने "वहीं पर वैसर्टन गायन की शुरूआत की और उनकी गुरू का नाम रोज़ मैरी था। इस के साथ ही घर में उन्होंने अपने पिता डॉ. एल. सुब्रमण्यम और माता वी.जी. सुब्रमण्यम से कर्नाटक संगीत की शिक्षा प्रारंभ कर दी।" इन्होंने डा. एल. सुब्रमण्यम से सबसे पहले उसलो नौरवे में प्रस्तुतिकरण दिया। उनकी एक कंपोज़ीशन थी, जिस का नाम था एसट्रोसिंफनी। उसमें प्रस्तुतिकरण किया। बिंदु सुब्रमण्यम के पति संजीव नायक भी एक अच्छे वायलिन वादक है। उनकी पुत्री साहनी सुब्रमण्यम जो कि मात्र 14 वर्ष की है, वह भी वायलिन सीख रही है। अकादमिक शिक्षा में उन्होंने एल.एल.बी. और लंदन जाकर वहां से एल.एल.एम. किया है। इस के बाद उन्होंने जैन युनीवर्सिटी से एम.ए. और फिर पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त की। वर्तमान समय वो सापा अकादमी जो कि संजय नगर बैंगलुरू में है, उस की सीईओ है और लक्षमी नारायण गलोबल सैंटर ऑफ एक्सीलेंस की डीन है। इन दोनों संस्थाओं की पुस्तकें, पाठ्यक्रम सब बिंदु सुब्रमण्यम और अम्बी सुब्रमण्यम द्वारा बनाया जाता है। बिंदु सुब्रमण्यम अमेरिका, जापान, चीन, सिंगापुर, मलेशिया आदि बड़े देशों में और भारत वर्ष में कई मंचों पर प्रस्तुतिकरण दे चुके हैं। बिंदु सुब्रमण्यम को हिंदुस्तान टाईमस की ओर से 'THIRD GENERATION PRODIGY' का खिताब मिला। इस के अलावा कर्नाटका की फैमिना मैग़ज़ीन की ओर से 'A BANGLORE WOMAN CHANGING THE WAY CHILDREN LEARNING' और टाईमस ऑफ इंडिया की ओर से ASSURED YOUNG SPORANO का खिताब मिला। अभी भी वो बड़ी ही समर्पित भावना से संगीत के प्रचार-प्रसार में लगी हुई हैं।

हरी रवि कुमार:- हरी रवि कुमार डॉ. एल. सुब्रमण्यम के सबसे प्रिय शागिर्द हैं। इनका जन्म एक संगीतक परिवार में हुआ। माता गायिका और वीणा वादिका, नानी गायिका और दादी गायिका होने के साथ-साथ गायिका वादिका थी। "हरी ने सबसे पहले मृंदगम की शिक्षा प्राप्त की फिर उन्होंने वसवन गुड़ी रॉव से वायलिन की शिक्षा प्राप्त की।"[i] 2001 में इन्होंने डॉ. एल. सुब्रमण्यम का एक एलबम सुना जो कि सोलो एलबम था। फिर 2005 में हरि को डॉ. एल. सुब्रमण्यम से मुलाकात करने का मौका मिला। "लगभग 20 साल हो गए, मुझे निरंतर सीखते हुए"[ii] हरी ने बताया कि उन्होंने पांच साल लगातार केवल सरगम ही बजाई। कोई राग नहीं बजाया और साथ-साथ सिर्फ दायें और बायें दोनों हाथों की तकनीकों का रियाज़ किया। हरी सापा अकादमी में लगभग 10 साल वायलिन के अध्यापक के पद पर रहे। डॉ. एल. सुब्रमण्यम की सारी पब्लीकेशनस का काम हरी ही देखते हैं। हरी गलोबल म्युज़क फैस्टीवल में भी प्रस्तुतिकरण दे चुके हैं। और एल.एस. के साथ भी कई जगह प्रस्तुति दे चुके हैं।

कंचना श्रुति रंजनी:- श्रुति रंजनी का जन्म 15 जुलाई 1981 में चेन्नई में हुआ। इनका जन्म एक सांगीतिक परिवार में हुआ। इनके दादा कंचना वेकांरा सुब्रमण्यम एक गायक थे और इनके नाना पदम् श्री डॉ. सत्यनारायण एक संगीत शास्त्री थे। इनके पिता कंचना वी. सुब्रमण्यम एक वायलिन वादक और माता रोहिणी सुब्रमण्यम एक गायका थी। श्रुति के अनुसार "मेरी सांगीतिक तालीम घर पर हुई। अपने पिता से वायलिन की शुरूआती तालीम प्राप्त की" अकादमिक शिक्षा में इन्होंने बैचुलर में एल.एल.बी. की डिग्री प्राप्त की पर सांगीतिक सफर को साथ-साथ जारी रखा। डॉ. एल. सुब्रमण्यम से इनकी मुलाकात 2011 में सापा अकादमी में एक शिक्षक के पद पर नियुक्त होने के बाद हुई। श्रुति 2011 में एल. सुब्रमण्यम की शागिर्द बन गई। 2011 से लेकर अभी तक निरंतर सीख रही है। श्रुति के अनुसार "डॉ. एल. सुब्रमण्यम के कहने पर एम.ए. संगीत में और फिर पी.एच.डी. की डिग्री संगीत में प्राप्त की, एल.एस. सर ने मेरी वायलिन वादन की सारी तकनीकों में बदलाव किए।" श्रुति अभी तक कई देशों जैसे अमेरिका, फिनलैंड, डैनमार्क आदि में अपने गायन और वादन की पेशकारियां दे चुकीं हैं। कंचना एस. श्रुति रंजनी और उनकी बहन कंचना एस. श्रीरंजनी, कर्नाटकी संगीत में कंचना सिसटर्ज़ के नाम से प्रसिद्ध है। कंचना श्रुति रंजनी रेडियो की 'A' ग्रेड की कलाकार हैं। श्रुति मानते हैं कि हम बहुत किस्मत वाले हैं जो हमें एल.एस. सर गुरू के रूप में मिले। वो समय के बहुत पाबंद हैं। इस के लिए वो लॉकडाऊन के दिनों की उदाहरण देते हुए बताते हैं कि रोज़ रात को सर हमारी कलास 9:30 बजे पर लेते थे, हम लोग ऑनलाईन कलास में 10-15 मिन्ट देरी से भी कलास में आते थे पर गुरू जी पूरे 9:20 में कलास के लिए बैठ जाते थे।

मेधा मंजूनाथ:- मेधा मंजूनाथ डॉ. एल. सुब्रमण्यम से गायन और वायलिन वादन दोनों की शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। मेधा का जन्म 15 अगस्त 1996 को मैसूर में एक सांगीतिक परिवार में हुआ। मेधा ऑल इंडिया रेडियो की A ग्रेड की कलाकार है। इनके माता एक गायका और वीणा वादिका भी हैं जो कि गुरू सुकन्या प्रभाकर से सीख रही हैं, तो अपनी माता के साथ ही श्रुति को भी अपने पहले गुरू सुकन्या प्रभाकर जी से ही सीखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पर सर्वप्रथम इनकी माता ने इनको और इनकी बहन दोनों को शुरूआत में सिखाना शुरू किया। मेधा ने अपनी अकादमिक शिक्षा में बैचुलर में इंजीनियरिंग की पढ़ाई की मगर संगीत की शिक्षा निरंतर चलती रही, "इस के बाद मैंने मास्टर्स की डिग्री संगीत में लक्षमी नारायण गलोबल सैंटर ऑफ एक्सीलेंस से की, और अभी डॉ. एल. सुब्रमण्यम के मार्ग दर्शन में कर रही हूं।" मेधा मंजूनाथ ग्लोबल म्युज़िक फैसटीवल में भी कई बार प्रस्तुति दे चुकीं हैं। और रेडियो पर भी इनके प्रोग्राम चलते हैं। मेधा के पति बहुत अच्छे मृदंग वादक हैं। मेधा के अनुसार "डॉ. एल. सुब्रमण्यम बहुत अच्छे गायक भी हैं, और मैं उन से वायलिन के साथ-साथ गायन संगीत का भी अध्ययन कर रहीं हैं" मेधा मंजूनाथ मलेशिया, सिंगापुर, जापान और चीन जैसे बड़े देशों में भी अपना प्रस्तुतिकरण दे चुकीं हैं। और अभी सापा अकादमी में एक अध्यापिका के तौर पर अपनी सेवाएं निभा रही हैं।

माहिती सुब्रमण्यम:- माहिती सुब्रमण्यम, बिंदु सुब्रमण्यम और संजीव नायक की पुत्री हैं। वह केवल 14 साल की है। वह सापा अकादमी की विद्यार्थी है। वो अपना नाना डॉ. एल. सुब्रमण्यम से वायलिन, अपनी मां से पश्चिमी संगीत की शिक्षा ले रही हैं। अपनी नानी कविता कृष्णामूर्ति से फिल्मी संगीत और सापा अकादमी से भी शिक्षा प्राप्त कर रहीं हैं। माहिती केवल 3 साल की उम्र से वायलिन सीख रही है। अभी तक कई देशों में मंच प्रदर्शन कर चुकी हैं। माहिती लक्षमी नारायण ग्लोबल म्यूज़िक फैस्टीवल में भी लगभग पांच साल की उम्र से प्रस्तुतिकरण कर रही हैं।

उपसंहार:- उपरोक्त चर्चा से हमें पता चलता है कि डॉ. एल. सुब्रमण्यम भारतीय संगीत का विश्व स्तर पर प्रचार करते हुए कैसे अपने शागिर्दों के द्वारा संगीत का प्रचार प्रसार करने में लगे हुए हैं। आप अपने शागिर्दों का सांगीतिक तालीम देने के साथ-साथ उनके बौद्धिक स्तर का भी विकास करने में साथ देते हैं। इस के अलावा आप उनको समय के पाबंद, और अनुशासन का पालन करने की हमेशा शिक्षा देते हैं। एक गुरू सदियों तक केवल अपने शागिर्दों को दी गई शिक्षा के द्वारा ही ज़िंदा रह सकता है और यह सेवा आप भी निभा रहे हैं और आपके शागिर्द भी इसी सोच के धारणी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. ऐल. सुब्रमणियम, भेंट वार्ता, 18 जुलाई, 2025, बैंगलुरू।
2. अभिनव, भेंट वार्ता, 20 जुलाई, 2025, बैंगलुरू।
3. अम्बी सुब्रमण्यम, भेंट वार्ता, 21 जुलाई, 2025, बैंगलुरू।
4. अम्बी सुब्रमण्यम, भेंट वार्ता, 21 जुलाई, 2025, बैंगलुरू।
5. बिंदु सुब्रमण्यम, भेंट वार्ता, 21 जुलाई, 2025, बैंगलुरू।
6. हरी रविकुमार, भेंट वार्ता, 20 जुलाई, 2025, बैंगलुरू।
7. हरी रविकुमार, भेंट वार्ता, 20 जुलाई, 2025, बैंगलुरू।
8. कंचना श्रुति रंजनी भेंट वार्ता, 20 जुलाई, 2025, बैंगलुरू।
9. भेंट वार्ता, श्रुति रंजनी, 21 जुलाई, 2025, बैंगलुरू
10. मेधा मंजूनाथ, भेंट, वार्तालाप, 21 जुलाई, 2025, बैंगलुरू।
11. मेधा मंजूनाथ, भेंट, वार्तालाप, 21 जुलाई, 2025, बैंगलुरू।